आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 3/जून 2023

Received: 09/06/2023; Accepted: 14/06/2023; Published: 24/06/2023

संस्कृति और राष्ट्र

सौम्यश्री हेच.डी.
सहायक प्रोफ़ेसर
सुराणा कालेज, साउथेंड सर्कल ,बैंगलोर
मोबाइल नंबर:-9019807491
ईलेम :-sowmyashree.hd@suranacollege.edu.in

सौम्यश्री हेच.डी, **"संस्कृति और राष्ट्र"**,आखर हिंदी पत्रिका,खंड 3/अंक 3/जून 2023,(267-269)

भारतीय संस्कृति प्राचीन एवं गौरवपूर्ण है। विश्व संस्कृति के इतिहास में इसका विशिष्ट स्थान है। इस संस्कृति को समृद्ध और समुन्नत बनाने में हमारे ऋषियों, मुनियों , साधू – संतों , दार्शनिकों , विचारकों, आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। गुरु वेदव्यास, वाल्मीकि, कालिदास, स्वंयभू, पुष्पदंत, संत तुलसीदास, संत कबीरदास, गुरुनानक देव, गुरुगोविंद सिंह, रामधारी सिंह दिनकर, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा आदि ऐसे महान संत, कवि और लेखक थे, जिन्होने भारतीय संस्कृति को राष्ट्रीय स्तर पर दीप्तिमान किया है।

संस्कृति का अर्थ 'सुधरी हुई स्थिति ' होता है । मनुष्य स्वभावत: प्रगतिशील प्राणी है। वह बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों तरफ की प्राकृतिक परिस्थितियों को निरंतर सुधारता और उन्नत करता रहता है। वह प्रत्येक जीवन – पद्धति, रीति – रिवाज, रहन – सहन, आचार – विचार, नवीन अनुसंधान का अविष्कार कर पशुओं और जंगलियों के दर्जे से ऊँचा उठकर सभ्य बना है। सभ्यता संस्कृति का अंग है। सभ्यता से मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की प्रगति होती है और संस्कृति से मानसिक क्षेत्र की प्रगति होती है। मनुष्य केवल भौतिक परिस्थितियों में सुधार करके ही संतुष्ट नहीं रह सकता है। वह सिर्फ भोजन से ही नहीं जीता है। उसके 'शरीर' के साथ 'मन' और 'आत्मा' भी है। भौतिक उन्नति से सिर्फ शरीर की भूख मिट सकती है, किन्तु इससे मन और आत्मा अतृप्त ही रहेंगे, जिसे संतुष्ट करने के लिए मनुष्य विकास और उन्नति करता है, उसे संस्कृति कहते है। इस प्रकार मानसिक क्षेत्र में उन्नति ही उसके प्रत्येक 'सम्यक कृत' की संस्कृति बन जाती है।

किसी भी राष्ट्र की महानता एवं उसके गरिमामयी व्यक्तित्व का निर्माण उसकी उत्तम संस्कृति एवं सामाजिक परंपराओं पर निर्भर करता है। भारतवर्ष अपनी विशालता और आदर्शमयी जीवनधारा के कारण ही पूरे विश्व भर में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहाँ की प्राकृतिक दृश्य, जीवन दर्शन और लोगों का सौंदर्य, उनकी आत्मीयता, विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों, मतों, विचारों और भावनाओं की विविधताओं के बावजूद भी राष्ट्र के सन्दर्भ में एकमत सेना यहाँ की महानता है। डॉ .विजयेन्द्र भारत की

महान परम्पराओं से जुडे जीवन मूल्यों को व्यक्त करते हुए लिखते हैं - "भारतवर्ष आध्यात्मिक सम्पदा से संपन्न, सांस्कृतिक अवधारणाओं से पल्लवित, धार्मिक चेतना से ओत – प्रोत और आस्तिक जीवन मूल्यों की विविध घटनाओं से संक्लिष्ट एक ऐसा देश है जो धर्म, दर्शन, कला, संस्कृति एवं साहित्य चिंतन आदि नाना पद्धतियों से संपन्न होकर एक में अनेक की प्रतीति करता है। संस्कृति हमारे जीवन के अन्दर में व्याप्त है। जिस प्रकार फूल के अन्दर सुगंध छिपा होता है उसी प्रकार संस्कृति का स्वरुप है। संस्कृति वास्तव में मनुष्य जीवन का सर्वस्व है।" मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाएँ संस्कृति है। उनके मत में संस्कृति मनुष्य की विविध साधनाओं की परिणति है ..... भारतीय जनता की विविध साधनाओं की सुन्दर परिणति को ही भारतीय संस्कृति कहा जा सकता है । स्वामी करपात्री जी के कथन के अनुसार – " मनुष्य के लौकिक, परलौकिक, धार्मिक, आर्थिक, आध्यात्मिक, राजनितिक अभ्युदय के उपयुक्त देहेन्द्रियों, मन, बुद्धि, अहंकार आदि की भूषण भूत चेष्टाएँ एवं हलचल ही संस्कृति है। अत: संस्कृति मानव जीवन के उत्थान का आंतरिक तत्व है।

भारतीय राष्ट्र का जीवन मूल्य मूलत: संस्कृति की साधना का प्रतिफल है , जो सदियों से मानवता के मनोरम भाव के रुप में विद्यमान है। इसलिए भारतीय संस्कृति सराहनीय है। मुहम्मद इकबाल ने भारत राष्ट्र की संस्कृति के जीवन मूल्यों को अपनी वाणी के माध्यम से अत्यंत ही सुन्दर ढंग से चित्रित किया है ।

"यूनान, मिश्र रोमां सब मिट गए जहाँ से
अब तक मगर है बाकी नामोनिशाँ हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमाँ हमारा।"

प्रवासी भारतीयों ने भी भारतीय संस्कृति को विश्व भर में फैलाने का कार्य किया है। विश्व में प्रवासी भारतीय अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए हैं। आज भारत के बाहर कई देशों में शासन अध्यक्ष भी भारतीय है। इनमें आयरलैंड में मराठी मूल के और पुर्तगाल में गोवा मूल के प्रधानमंत्री हालिया हैं। प्रवासी भारतीय दिवस नौ जनवरी १९१५ को महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका से लौटने के उपलक्ष में मनाया जाता है। सरकारी आंकडों के अनुसार दुनिया भर में प्रवासी भारतियों की संख्या तीन करोड बारह लाख है। इनकी सबसे खास बात यह है कि इन्होंने खुद को अपनी पुरानी परम्परा यानि भारतीय संस्कृति से जोडे रखा। लंदन ले हमारे प्रिय शायर सोहन राही के इन पंक्तियों में यही प्रेम झलकता है।

"कोयल कूक पपीहा वाणी, ना पीपल की छाँव।
सात समंदर पार बसाया हमने अपना गाँव।"

'सोने की चिडिया' के नाम से जिस देश को गौरवान्वित किया गया हो उसके संस्कृति में कुछ विशेष सामाजिक और नैतिक मूल्यों का मिश्ण है जिसका लोहा समुचे विश्व ने माना, मानवी उत्पति और विकास के हर एक पहलू पर नज़र डाले तो भारत के संस्कृति ने उच्च विचार, आदर्श और मूल्यों को बहुत पहले से अपनाया था। ये अथक संशोधन के बाद आज के पीढियों के सामने स्पष्ट हुआ है ऐसे ही 'भारतीय संस्कृति' इस खास विषय पर कुछ खास विचार संकलित कर आपके सामने लाये है , ये पढते वक्त आपको ना केवल

मज़ा आयेगा बल्कि भारतीय होने के गौरव भाव भी महसूस होगा । विश्व को हर्दम कुछ अनुठा और सर्वश्रेष्ठ योगदान भारत ने दिया है , भारत के वेद , पुराण , शास्त्र अति प्राचीन और महान है, जिसमें इंसान को जीवन से मृत्यु तक किस प्रकार क व्यवहार समान , परिवार और वैयक्तिक तौर पर करना है , इसके साथ में भौतिक विकास के साथ अध्यात्मिक विकास किस प्रकार करना है जैसे मूल्यों की उदात्त शिक्षा और जीवनशैली भी विस्तृत तरीके से दी गई है ।

बिना संस्कृति और महान मूल्यों के मानव का जीवन अंधकारमय सा होता है। ये निष्पक्ष बात है, आज के भागदौड के जीवन में आम लोगों को योग और ध्यान की महत्ता समझ में आ गई , ये भारत के लाखों साल पुराने महान ऋषियों और महानुभावों की देन है, जिसे समुचे विश्व ने आदर भाव से स्विकृतकर जीवनशैली का अहम हिस्सा बनाया है।

"जब तक संस्कृति है, तब तक आस है,

बिना संस्कृति मानवता का विनाश है।"

सन्दर्भ ग्रंथ :-

१. भारतीय संस्कृति .wikipedia

२. https://www.इंडिया.सरकार.भारत/topics/art-culture

३. https://www.amazon.in/Samvidhan-Sanskriti-Aur-Rashtra-Hindi-

****